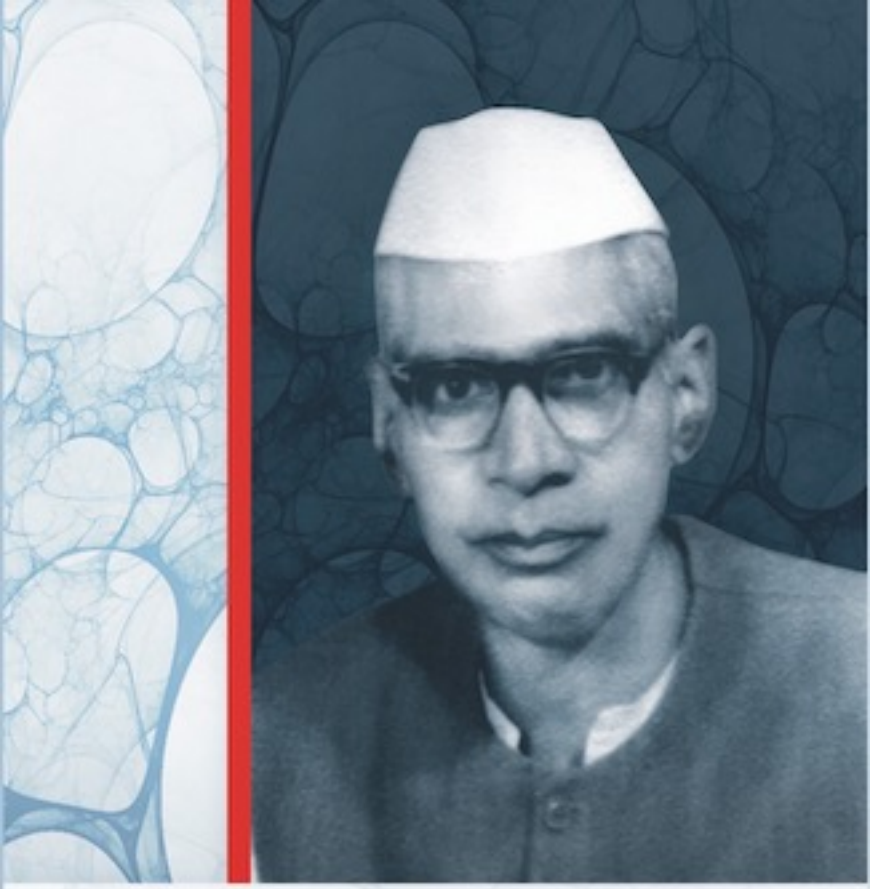

बनारसी प्रसाद भोजपुरी रचनावली खण्ड-1

सम्पादक
अरविन्द कुमार

बनारसी प्रसाद भोजपुरी
रचनावली खण्ड-1

जीवन वृत्त

बनारसी प्रसाद भोजपुरी का जन्म भोजपुर के बड़हरा ग्राम के एक किसान परिवार में 1904 ई. की आषाढ़ पूर्णिमा (27 जुलाई) को हुआ था। आपके पिता मुंशी रामवरण लाल उस इलाके के खाते-पीते किसान माने जाते थे। आपका विवाह सन् 1920 ई. में मटुकपुर, भोजपुर निवासी मुंशी राजदीप सहाय की कन्या नन्दरानी देवी के साथ हुआ था।

आपके साहित्य अनुष्ठान का प्रारम्भ सन् 1925 ई. में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा संचालित साप्ताहिक 'देश' के सम्पादकीय विभाग से हुआ। फिर आप पटना से ही प्रकाशित होने वाले अन्य पत्रों जैसे– 'जनक', 'नवशक्ति', 'नवराष्ट्र' के सम्पादकीय विभागों में रहे। इसके अलावे आपने 'सूर्य' और 'आर्य महिला'(बनारस) तथा 'ग्राम पंचायत' और 'स्वाधीन भारत'(आरा) जैसे महत्त्वपूर्ण पत्रों का सम्पादन किया। अपने जीवन के आखिरी लगभग पन्दह वर्षों में आप आरा नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे तथा उसकी पत्रिका 'शोध' का सम्पादन किया।

आपके विवेचनात्मक निबन्ध सरोज, विशाल भारत, गंगा, कर्मवीर, योगी, हुंकार, बिजली, प्रताप, विद्यार्थी, पाटल, नयी धारा, सनातन धर्म, कल्याण, संतवाणी, ग्रामसेवक, हिन्दू पंच, मतवाला आदि पत्र-पत्रिकाओं में सन् 1921 ई. से ही प्रकाशित होते रहे।

आपकी कृतियों में 'समाज का पाप', 'गरीब की आह', 'अर्द्धांगिनी, 'हलवाहे का बेटा' (उपन्यास), 'दो प्राणी' (कहानी संग्रह), 'मेरे राम का फैसला', 'चांडाल चौकड़ी' (हास्य-व्यंग्य), 'जेल का साथी' (निबंध-संग्रह), भारतीय संत एवं ध र्माचार्य' (शोध-ग्रंथ) तथा 'धुँधले चित्र' (संस्मरण एवं आत्मकथा) प्रमुख हैं।

आप साहित्यकार के साथ-साथ चिकित्सक भी थे। सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद आपने अपने को होमियोपैथिक और बायोकेमिक चिकित्सा के प्रति समर्पित कर दिया तथा आरा के होमियोपैथिक कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य के रूप में दस वर्षों से अधिक समय तक अपनी सेवा दी। इसी बीच आपकी 'बायोकेमिक चिकित्सा' नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई।

आप साहित्यकार तथा चिकित्सक के अलावे आजादी की लड़ाई के सेनानी भी थे। सन् 1921 में महात्मा गाँधी की पुकार पर असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। फिर जेल गये, पर जेल से छूटने के बाद पुनः एक स्वतंत्र राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने में लग गए। आपने सरकारी नौकरी तभी स्वीकार की जब देश आजाद हो गया। आपकी अंतिम यात्रा 13 दिसम्बर, 1988 ई. को नेहरू नगर, आरा स्थित अपने आवास में पूरी हुई।

बनारसी प्रसाद भोजपुरी रचनावली खण्ड-1

सम्पादक
अरविन्द कुमार

नन्दरानी देवी की स्मृति को

खण्ड-1

अनुक्रम

भूमिका 09

उपन्यास

हलवाहे का बेटा 27

माया सुन्दरी 279

कहानी संकलन

दो प्राणी 369

निबंध-संग्रह

जेल का साथी 431

सम्पादकीय 481

अनुवाद

मेरे देवता 523

अन्य निबंध 565

भूमिका

ऐसे थे बाबू बनारसी प्रसाद भोजपुरी

बाबू बनारसी प्रसाद भोजपुरी का जन्म भोजपुर(पहले शाहाबाद) जिले के बड़हरा ग्राम में 1904 की 27 जुलाई (आषाढ़ पूर्णिमा) को हुआ था। बड़हरा ग्राम भोजपुर जिले की उत्तरी पूर्वी सीमा पर स्थित है जिसकी भोजपुर के मुख्यालय आरा से दूरी लगभग पंद्रह कि०मी० है। इस गांव को लेकर एक पुरानी कहावत है—'बुरूज गंज बड़हरा, बंबू की मार मारा।' इसका भावार्थ यह है कि सन् अठारह सौ सत्तावन में सिपाही विद्रोह के समय वीर कुंवर सिंह की पलटन का पता लगाने के लिए ब्रिटिश सरकार की फौज की एक टुकड़ी बड़हरा गांव से सटे उत्तर की ओर बहने वाली गंगा को पार करने के लिए बड़हरा पहुंची और मल्लाहों से गंगा पार कराने के लिए कहा। मल्लाहों ने घाट पर अपनी-अपनी नावों को तैयार किया। उन नावों पर जब फौज के जवान चढ़ गये तब मल्लाहों ने उन नावों को गंगा के बीच धार में ले जाकर खड़ा किया और उनमें आग लगा दी। जब आग की लपटें ऊपर उठने लगीं तब वे पानी में कूद गये और तैरकर घाट पर आ गये। वहां आकर गांव के लोगों को पुकारा। हरबा-हथियार के साथ गांव के लोग एकत्र हो गये। उधर आग लगने के बाद फौज के लोग घबड़ा गये और गंगा में कूदकर तैरते हुए घाट पर आने लगे। ग्रामीणों ने कतार बांधकर डंडे, लाठी से उन्हें मारना शुरू किया। कहा जाता है कि टुकड़ी का कोई भी जवान जिन्दा नहीं बच सका। उसी समय से बड़हरा विख्यात हो गया।

उसी ग्राम में बाहर से आकर मुंशी घराने के कुछ लोग बस गये जिनमें बाबू बनारसी प्रसाद भोजपुरी के पूर्वज भी थे। इनके दादा का नाम मुंशी फकीरचंद लाल था। इनके पिता दो भाई थे जिनमें एक इनके पिता मुंशी रामवरण लाल तथा दूसरे इनके चाचा मुंशी रामचरित्र लाल थे। इनके पिता मुंशी रामवरण लाल सचमुच के एक किसान थे जिन्हें खेत तथा उसकी मिट्टी से गहरा लगाव था। इसी लगाव के कारण वे रात और दिन में कोई भेद नहीं मानते थे, वे रात में भी उठकर अक्सर दियारे में अवस्थित अपने खेतों की ओर घूमने चले जाते और अहले सुबह लौटते। गाय, भैंस, बैल और घोड़ी उनके अपने मवेशी थे जिनकी देखभाल करना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। घर में मवेशियों को खिलाने के लिए एक चरवाहा रखा गया था पर उसके